



टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

फरवरी 2020 वर्ष 24, अंक 02 □ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 □ विक्रमी सम्बत् 2075-76 □ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल: tankarasamachar@gmail.com □ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये □ वार्षिक शुल्क 200 रुपये □ आजीवन 1000/-रुपये

“महर्षि की भव्य भावना”

- त.शि.क. कण्णन-चेन्नै

आज जब हम अपने साप्ताहिक सत्संगों में “स्तुता मया वरदा वेदमाता” का उच्चारण करते हैं, या “माता भूमि पुत्रो अहम् पृथिव्या” यह भूमि मेरी माता है, मैं इसका पुत्र हूँ, वस्तुतः महर्षि की अपूर्व या अनुभूति की पंक्ति थी। “जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्मणाम् पृथिवी पथौकसम्” पृथिवी पर यत्र तत्र बसे हुए विभिन्न समुदायों में विभक्ति हैं उनकी प्रस्तुति मात्र लोक जन हैं।

विभिन्न जनों के अनेक भेद हैं, जो प्रकृति प्रदत्त हैं, इन मनुष्यों में पारस्परिक विभिन्नता है। जो उनकी बोलियों व नाना धर्मों की अपनी भावना को व्यक्त करती हैं। भूमि माता ने मनुष्यों को इतना कुछ देकर उनकी झोली भर दी है।

वैदिक मुनि ने पृथिवी के प्रति अपनी कृतज्ञता से यह पंक्ति पढ़ी।

“भुजिष्य पात्रं निहितं गुहा यदाविभोर्गोडभवन् मातृमदम्यः”

पृथिवी माता कितनी श्लाघनीया स्वरूपा है। विश्व के अनेक भोज्य पदार्थों से आपूरित एक अक्षय क्लश है। यह तो उनके लिए समर्पित है, जिनके हृदय में वेद माता के प्रति ममता है, तेजस्विता है।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने सर्वदा वेदों के अनुसार जीवन को परिष्कृत प्रेरित तथा ऊर्ध्वगामी बनने के लिए वेदों के अनुपम मन्त्रों की ध्वनि गुंजाने उदात्त परक एक कमनीय व्रत था। वेदों की उन्नति ही उनकी विराट साधना का क्षेत्र था।

विश्व भर के साहित्य में वैदिक ग्रन्थों का अतिशयता की दृष्टि से सर्वप्रथम स्थान है। पुनः मानव जाति के ऊर्ध्वीकरण के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सफल भगीरथ प्रयत्न किया है। शायद इसलिए वेदों का जो किंचित् प्रभाव है वह पूज्यापाद महर्षि जी की अनुपम विशाल देन है।

“क्रियते भास्करणैव स्फारस्फुरित तेजसा” जिस प्रकार तेजस्वी सूर्य समस्त विश्व भुवन को प्रकाशित कर देता है, उसी प्रकार महर्षि दयानन्द जी ने समस्त विश्व को वेदों से प्रकाशित कर परिचित कराया है। महर्षि जी के आत्म चिन्तन से जीवन मूल्यों की समष्टि कल्याण की दृष्टि से उनका प्रयास श्लाघनीय है।

महर्षि की वेदों में गहरी आस्था थी, इस निष्ठा को समझते हुए उन्होंने वेदों की अपरिमित अनिर्वचनीय सेवा समर्पित की है। सम्पूर्ण

वेदमन्त्रों का अस्तित्व नूतन वेदों के मौलिक विचारों के प्रकर्ष प्रयोग से वेदों की सर्वसाधारण प्रेरक सेवा प्रस्तुत की है।

वेदों की सारस्वत निष्ठा एवं साधना के कारण नूतन शतशः उचित विचारों का योगदान अनुपम है। महर्षि दयानन्द जी ने सर्वदा पुकार-पुकार कर हिन्दू समाज के सम्मुख ब्रह्मचर्य का मन्त्र रखा, इतना ही नहीं, वेदों के पठन-पाठन के प्रति समस्त समाज का ध्यान खींचा। महर्षि की सेवा तो जनता की भलाई के लिए सर्वदा प्रस्तुत होती रही है। यजुर्वेद के इस मन्त्र खण्ड से महर्षि सदा अपना भाषण शुरु करते थे।

“वयं राष्ट्रे जागृयाम्” हमें राष्ट्र की सेवा के लिए सदा उद्यत रहना चाहिए। श्वेता तर उपनिषद् का यह भाव उन्हें अत्यन्त प्रिय था। जिस मनुष्य में ईश्वर के प्रति परम भक्ति है, उस पर सदा अटल रहना मनुष्य का पहला कर्तव्य है। भक्ति सेवा भाव राष्ट्र के प्रति उत्कर्ष करने वाली होती है। “राष्ट्राणि वै विशः” जनता ही राष्ट्र बनाती है, जनता राष्ट्र की उन्नति के लिए कुछ कर्तव्य बनाती है। प्रेम और भातृत्व भाव से एक विशाल कुटुम्ब की तरह वृद्धि करने से ही राष्ट्र की सच्ची शक्ति बनती है। विवेकपूर्ण लोगों का छोटा सा दल असंख्य मूर्खों के जंगल से अच्छा है और जिस राष्ट्र ने स्वस्थिति से अवगत हो गया, वही राष्ट्र शक्तिशाली बन सकता है।

जिस राष्ट्र में असत्य का बोल बाला होता है, वह राष्ट्र ही शक्तिहीन होता है। राष्ट्र की उन्नति सत्य, दया और न्याय के अनुपात के आधार पर अवलम्बित होती है। यजुर्वेद की पंक्ति है:- “वाचः सत्यमशीय” मैं अपने कर्तव्य पालन में सत्य को अपनाऊँ। आपका भविष्य कैसा सुखकर हो यह आपके कर्तव्य पर सदा निर्भर करता है “अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योवक्ताः शरीरिणः”-गीता शरीर भी कालान्तर में नष्ट हो सकता है, इसका स्मरण आपमें राष्ट्र के प्रति विश्वास होगा। प्रेम प्रभु की प्रीत ही आपूर्ण अनुराग ही भक्ति की भद्रता है। क्षणभर के लिए अपने देश के बारे में सोचो। “राष्ट्राणि वै विशः” ऐतरेय ब्राह्मण की यह पंक्ति हमें कितना सुख देती है। जनता ही राष्ट्र बनाती है। अतः आप में राष्ट्रीयता का भाव होना चाहिए। राष्ट्र गीत की यह पंक्ति हमें कितनी सुहाती है।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

इस शत्रु से बचो

पद्म श्री डॉ. पूनम सूरी जी द्वारा उत्तर भारत के प्रधानाचार्यों को सम्बोधित करते उनके वक्तव्य में से कुछ अंश

शत्रु मित्र भी होते हैं और मित्र शत्रु भी होते हैं। शत्रु तो शत्रु होते ही हैं लेकिन देखने में आया है कि हम स्वयं भी अपने शत्रु होते हैं। हमारे अपने द्वारा किये गये ऐसे कार्य जो हम गलती से कर देते हैं और परिस्थितियां ऐसी बन पड़ी, कि समय के साथ वही किया गलत कार्य शत्रु बन जाता है। कुछ कार्य हम सोचे समझे भी कर देते हैं जो बाद में हमारे शत्रु (दुःख का कारण) हो जाते हैं।

ऐसे कार्य जो हम सोच-समझकर करते हैं उनमें सबसे प्रसिद्ध और चर्चित है। 'क्रोध' जो हम स्वयं करते हैं और उसे अपना शत्रु बना लेते हैं। किसी विचारक ने अंग्रेजी में कहा है—'Anger is the Prize we Pay for other person's mistake' अर्थात् हम औरों की गलतियों का मूल्य क्रोध द्वारा चुकाते हैं। क्रोध को शैतान की संज्ञा भी दी गई है। क्रोध के वश में होकर हम अपना आपा खो बैठते हैं। कहते हैं, कि आदमी क्रोध में अंधा हो जाता है। उसे अच्छे-बुरे का कुछ पता नहीं चलता। क्रोध के आवेश में मनुष्य कुछ ऐसा कर बैठता है जिससे उसे सारी आयु पछताना पड़ता है।

क्रोध का शाब्दिक अर्थ है मन का ऐसा अप्रिय भाव जो प्रतिकूल अवस्था ना होने पर उठे अभाव, असहिष्णुता ही क्रोध का मूल कारण होते हैं। ऋषियों ने जहां काम, लोभ, अहंकार को दुर्गुण माना है वहीं क्रोध को भी इसी श्रेणी में रखा है। पाप का मूल क्रोध को कहा गया है और 'इससे हमेशा बचकर रहना चाहिए' की शिक्षा दी गई है।

आजकल देखने में आया है कि क्रोध व्यक्तियों की नाक पर बैठा रहता है। बात-बात पर लोग क्रोधित हो जाते हैं, नतीजा यह होता है कि बात बढ़ जाती है, हाथापाई, मारपीट तक की नौबत आ जाती है, मामला थाने-अदालत तक पहुंच जाता है।

धैर्य, संयम, सहनीशिलता को आज कमजोरी माना जाता है। आज बच्चे पैदा ही तुनकमिजाजी लेकर हो रहे हैं। उस पर कोढ़ की तरह

फैलता, फिल्मों और टीवी पर हिंसा का प्रदर्शन नायक को गुस्सैल युवक (Angrey Man) की संज्ञा दिया जाना आम हो गई है।

ऐसा देखा गया है कि जो सबल और समर्थ होते हैं वे क्रोध नहीं करते। निर्बल ही अपनी विवशता और असमर्थता को क्रोध के माध्यम से प्रकट करते हैं। क्रोध किसी समस्या का समाधान नहीं है अपितु अपने आप में एक समस्या है। क्रोध से मानसिक तनाव पैदा होता है, जिससे उच्च रक्तचाप होता है। उच्च रक्तचाप को मौन हत्यारा कहा जाता है। इसके बाद तो हृदय रोग ही है।

मैं कहता हूँ कि क्रोध की स्थिति आने पर एक मिनट तक ओ३म् सिमरण करें या एक गिलास पानी पियें। किसी पत्र को पढ़कर क्रोध आ जाये तो उसका उत्तर उस समय ना दें, आशय यही है कि क्रोध के ज्वर को शान्त होने का समय दें। यह एक अनुभव आधारित उपयोगी सलाह है जिसे हमें अपने व्यवहार में ले आना चाहिए।

क्रोध में होते हुए कभी दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब निहारकर देखिये, आपके मुख्यमंडल की सारी आभा, कोमलता जाती रहेगी, चेहरा वीभत्स हो जायेगा। जो लोग स्वभाव से क्रोधी होते हैं उनके चेहरे पर स्थायी रूप से भ्रुकुटी तनी रहती है। आप चेहरा देखते ही स्वयं पहचान जायेंगे कि व्यक्ति क्रोधी स्वभाव का होगा, शालीनता का अभाव होगा। व्यक्ति का चेहरा तो उसके व्यक्तित्व की झलक देता है और पहचान कराता है।

क्रोधी व्यक्ति से प्रत्येक आदमी कतराता है, दूर रहना चाहता है। परिणामस्वरूप वह अकेला पड़ जाता है। अपनी इस परिस्थिति पर भी वह क्रोधित रहता है। अन्दर ही अन्दर सुलगता रहता है, जबकि इस परिस्थिति के लिए वह स्वयं ही जिम्मेदार होता है।

क्रोध पर नियंत्रण करना कोई कठिन भी नहीं। केवल आवश्यकता

(शेष पृष्ठ 14 पर)

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

डी.ए.वी. के प्रधान पुनः निर्वाचित



निम्नलिखित अधिकारी प्रथमबार मनोनीत



श्री एच.आर. गंधार
उपप्रधान



श्री अजय सूरी, सचिव
महामन्त्री की जिम्मेदारी आवश्यकतानुसार



श्री नानक चन्द
कोषाध्यक्ष



बि. ए.के. अधलखा
कोषाध्यक्ष

मूल से जुड़े रहें...

इस वर्ष दीपावली पर परिवार के सभी छोटे-बड़े एकत्र हुए। बहुत समय के बाद ऐसा संभव हुआ था, क्योंकि सभी कामकाजी हैं। इस कारण अपनी सुविधानुसार ही मिल पाते हैं। साथ बैठने पर बातों की कड़ी बनी तो मैंने उसी दिन निर्वाण उत्सव में सम्मिलित हुआ तो चर्चा की कि इसका स्वरूप अब विशाल होता जा रहा है। बात क्या छिड़ी कि बचपन का वह समय सभी को याद हो आया जब इन कार्यक्रमों में सम्मिलित हुआ करते थे।

किसी ने कहा पिताजी वह कौन सा आयोजन था जिसमें खेलकूद और प्रतियोगिता हुआ करती थी। दिल्ली में आज भी बोधोत्सव इसी रूप में आयोजित होता है। कभी यह पुराना किला के खंडहरों के सामने कोटला मैदान में आयोजित होता था, सभी अपनी यादें स्मरण करते हुए कि मेले में तीन टांग की दौड़ में भाग लिया था तो किसी ने गायत्री मंत्र की दौड़ में भाग लिया था, कोई भाषण प्रतियोगिता में भाग लेने की बात कर रहा था। भाषण की कुछ पंक्तियां भी सुनाई जो अभी भी उन्हें स्मरण थी। मुझे लगा कि उस काल में बच्चों को आर्य समाज के कार्यक्रमों में लेकर जाना और उनमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना कितना ठीक था। आज सभी उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपने कामकाजों में लगे हैं विदेशों में रहते हैं। लेकिन फिर भी अपने मूल से जुड़े हैं।

बातों में ही आगे बच्चों ने कहा कि 25 दिसम्बर को शोभायात्रा में सबसे आगे स्कुटर हुआ करते थे चालक से सिर पर आर्यवीर दल की टोपी और पीछे बैठे के हाथ में ओ३म् ध्वज होता था। बच्चे आज भी उसी उत्साह से उसमें सम्मिलित होना याद कर रहे थे अच्छा लगा।

बातें छिड़ीं तो कुछ और बातें जैसे सुराही, मटके से पानी पीना, रात्रि खुले में सोना और तारों को गिनना, गरमी में चारपाई के चारों तरफ पानी का छिड़काव और मिट्टी की सौंधी खुशबू, बरसात में आधी रात को बिस्तरों को उठाकर घर के आंगन से अंदर को भागना इत्यादि।

बच्चे आज विदेशों में रहते हुए भी बचपन की उस प्रकृति के साथ जुड़े होने को भूल नहीं पाये थे।

हम क्यों भूल जाते हैं कि बचपन की ही वह आयु जिसमें बच्चा जिज्ञासु होता है, परन्तु हम उसका का सही उपयोग नहीं करते। इसी आयु में बच्चों/युवा को अपने मूल से जोड़ें और हमारा

मूल है आर्य सभ्यता, आर्य समाज, आर्य वीर दल, यज्ञ-सभ्यता और प्रकृति। बच्चे कहीं भी रहें, उसका इस आयु में इन सबसे जुड़ना व कभी भूल नहीं पायेंगे।

प्रयास करें कि आज के प्रदूषित वातावरण में जहां शिक्षा प्रदूषित है, वायु प्रदूषित है, खाना और पेयजल भी प्रदूषित है, मनोरंजन प्रदूषित है, संस्कार प्रदूषित हों, में अपनी आने वाली पौध को आर्य समाज जैसे यज्ञ से पल्लवित करें। बच्चों को आर्य समाज में लेकर जायें। प्रारम्भ में बच्चे वहां कुछ न समझ में आने की शिकायत करेंगे परन्तु आपका इस समय और स्थान पर बच्चों के साथ किया हठ, आर्य समाज जाने का, आपको आने वाले दिनों में लज्जित नहीं होने देगा। कुछ कहा, सुना और पढ़ा उनके अवश्य काम आयेगा। जैसे यज्ञोपवीत बचपन में धारण करवाना और 5-6 वर्ष बाद कुछ युवाओं का उसे उतार देना परन्तु यज्ञोपवीत की भावना और उसके महत्व को वह अपने मन एवं मस्तिष्क से नहीं उतार पायेंगे। घर के बालक विद्यालय की व्यस्तता के कारण यज्ञ में न बैठ सकें तो कोई बात नहीं परन्तु आप घर में यज्ञ करते रहें। यज्ञ के मन्त्र उनके कानों में पहुंचाते रहें। लाभ आपको बच्चों के युवा हो व्यवसाय/कामकाज में लगने के उपरान्त भी नजर आता रहेगा।

इसी संदर्भ में मूल से मूलशंकर की याद आ गई और याद हो आई मूल की जन्मभूमि टंकारा की। बच्चों को इस मूल की जन्म भूमि से भी जोड़ें। बच्चों को यहां अवश्य लायें और दिखायें की हमारी वैदिक संस्कृति में किस प्रकार से शिक्षा दी जाती है? ब्रह्मचारी कैसे अपना-अपना स्वयं काम करते हैं। कैसे प्रायः सायं स्वयं यज्ञ एवं संध्या करते हैं। गौशाला में गाय की सेवा कर दूध प्राप्त करते हैं। जो बड़े शहरों में रहकर शहरी शिक्षा पाकर कभी अनुभव नहीं कर सकते वह उन्हें यहां दिखाया जाये। यह भी मूल से जुड़ना ही है। इस वर्ष 1 मार्च 2011 को टंकारा से फिर निमंत्रण आया है। प्रयास करें कि बच्चों और युवाओं को साथ लेकर आयें, लाभ ही होगा। अन्त

में इसी कामना के साथ कि बच्चों और युवाओं के साथ आपसे टंकारा में भेंट होगी।

—अजय टंकारावाला

टंकारा अति भाया

नाथूराम शर्मा

गुरु गरिमा की गौरव गाथा,
हमको टंकारा अति भाया।
जिसका रज कण-कण चन्दन है,
पावन माटी का वन्दन है,
करसन कानन का नन्दन है,
समाधान उसने है पाया
जिज्ञासा जो लेकर आया।
हमको टंकारा अति भाया।।
जहां कर्मरत गुरुकुल गर्वित,
जहां पिप्पलाद से गुरु चर्चित,
एकलव्य से शिष्य समर्पित,
पतित पावनी डेमी सरिता,
करती पावन सबकी काया।
हमको टंकारा अति भाया।
कलुषित कल्मश मन के धुलते,
आर्यत्व के सांचे में ढलते,
साधक के मन प्राण सररुते,
संस्कृति संस्कार को मिलती,
वेदों के तरुवर की छाया।
हमको टंकारा अति भाया।।
निष्क्रियता आलस सब मिटते,
निष्प्राणों में प्राण सरसते,
बिन मांगे अनुदान बरसते,
अल्प आयु में बोध हुआ था,
महान ऋषिवर का पद पाया।
हमको टंकारा अति भाया।।

1380 (1), ध्यानचंद कॉलोनी, सीपरी बाजार, झांसी

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव 2020

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन वीरवार, शुक्रवार, शनिवार 20, 21, 22 फरवरी 2020 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी। (विस्तृत जानकारी अगले पृष्ठों पर प्रकाशित है।) - मन्त्री ट्रस्ट रामनाथ सहगल

सुखी रहने का एक ही उपाय

□ खुशहाल चन्द्र आर्य

जीवन में सुखी रहने का एक ही सर्वोत्तम उपाय है कि शुभ काम व परोपकारी काम करना और उनको निश्चित भाव से ईश्वर की न्याय-व्यवस्था के भरोसे छोड़ देना इससे बढ़कर सुखी रहने का कोई अन्य उपाय नहीं है। कारण ईश्वर पूर्ण न्यायकारी है, वह हमारे माता-पिता के समान है, हम सब उसके बच्चे हैं। कोई भी माता-पिता, अपने बच्चे को कभी भी दुःखी देखना नहीं चाहता और उनको अच्छी शिक्षा देना चाहता है ताकि बच्चा सही रास्ते पर चलता रहे और कोई गलत काम भी न करे। परमात्मा तो हमारे माता-पिताओं का भी माता-पिता है। इसकी न्याय-व्यवस्था में तो किसी प्रकार का अन्याय, दुःख, अत्याचार, अभाव किसी कारण के बिना हो ही नहीं सकता, फिर हमको किस बात का डर है। जब हमको पूरा विश्वास हो जायेगा कि ईश्वर के घर में या उसकी न्याय व्यवस्था में कोई अन्याय, पक्षपात, भेदभाव या कोई जबरदस्ती नहीं है तो हमें शुभ काम करके फल देने का अधिकार उसी के ऊपर छोड़ देना चाहिए। जैसे हम धन कमाकर तिजोरी में रख देते हैं कि यह रूपये हमारे सुरक्षित हैं। इन रूपयों को हम कभी भी जरूरत पड़ने पर काम ले सकते हैं। ठीक वैसे ही हमें शुभ कर्म करके, फल देने का पूरा अधिकार ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए। जैसे तिजोरी में रखा हुआ रूपया सुरक्षित है और हमारी जरूरत पर काम आ सकता है, वैसे ही ईश्वर के सुपुर्द किया हुआ शुभकर्म भी सुरक्षित है और वह भी हमको सुखी बनाने में ही काम आवेगा। उन शुभ कर्मों को सुरक्षित रख देने पर हमें कभी भी दुःखी नहीं होना पड़ेगा। ऐसा हमें पूर्ण विश्वास रखना चाहिए।

हम मोटी भाषा में कहते हैं कि “नेकी कर समुद्र में डाल”।

इसका भी यही अभिप्राय है कि अच्छे कर्म करो और फिर उसे भूल जाओ, कारण इन अच्छे कर्मों का फल हमें अच्छा मिलेगा ही, यह निश्चित है। इसलिए उन्हें भूलकर निश्चिन्त हो जाना ही अच्छा है। इसी प्रकार हम कहते हैं कि “नेकी और पूछ-पूछ”। इसका भी यही तात्पर्य है कि नेकी यानि शुभ कर्म या परोपकारी कर्म करने में पूछना क्या? यानि यह काम तो बिना पूछ ही कर लेना चाहिए। अब प्रश्न उठता है कि अच्छे शुभ कर्म हैं क्या? इसके लिए कुछ शुभ कर्म तो सर्वविदित हैं ही, जैसे अपने जीवन में ईमानदारी रखना किसी को धोखा न देना, किसी को दुःखी न करना। ईर्ष्या द्वेष, घृणा से सदा दूर रहना, सत्य बोलना, परोपकार करना आदि। इसके उपरान्त और अधिक जानकारी के लिए ईश्वर ने हमें सृष्टि के आरम्भ में ही वेद-ज्ञान चार ऋषियों जिनके नाम हैं-अग्नि, वायु, आदित्य और अंगीरा, इनके मुख से चार वेद जिनके नाम हैं-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद क्रमशः उच्चरित करवाये। उन वेदों में मनुष्य को क्या काम करने चाहिए क्या काम नहीं करने चाहिए। सब कुछ लिखा है। जीव का मुख्य व अन्तिम लक्ष्य मोक्ष पाना है जो मनुष्य योनि से ही सम्भव है। मनुष्य को क्या-क्या काम करने से मोक्ष पाना सम्भव है, यह सब वेदों में लिखा हुआ है। मनुष्य यदि वेदों में लिखे अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है तो उसको मृत्यु के बाद मोक्ष पाना निश्चित है। इसलिए मनुष्य को मोक्ष पाने के लिए वेदानुकूल चलना जरूरी है। इसीलिए ईश्वर ने वेद ज्ञान मनुष्य उत्पत्ति के आरम्भ में दिया। यह शिक्षा का ग्रन्थ है।

- C/o गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स 180 महात्मा गांधी रोड, द्वितीय मंजिल, कलकत्ता-700007, मो. 9830135794, फोन-033-22183825

दिनांक 20, 21, 22 फरवरी 2020 को आयोजित ऋषि बोधोत्सव हेतु दिल्ली से राजकोट जाने वाली गाड़ियां का विवरण

(1) देहरादून ओखा उत्तरांचल एक्स., ट्रेन न. 19566 नई दिल्ली से राजकोट दोपहर, 1.10 बजे (2) जामनगर कटरा एक्सप्रेस, ट्रेन नं. 12478, नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.30 बजे (3) हापा एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12476, नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.30 बजे (4) सराय रोहिल्ला पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19264, सराय रोहिल्ला से राजकोट प्रातः 8.20 बजे (5) पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19270, पुरानी दिल्ली से राजकोट दोपहर 01-05 बजे (6) पोरबन्दर एक्सप्रेस ट्रेन न. 19264 प्रातः 8.20 सराय रोहिला से राजकोट (7) सराय रोहिला राजकोट एक्सप्रेस ट्रेन न. 19580, दोपहर 1.30 बजे सराय रोहिला से राजकोट। (8) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12916, पुरानी दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन 3.20 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा (9) राजधानी एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12958, नई दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन सायं 7.55 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा।

राजकोट से दिल्ली जाने वाली गाड़ियाँ: (1) हापा एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12475, राजकोट से नई दिल्ली सुबह 6.50 बजे। (2) राजकोट सराय रोहिला एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19579, राजकोट से सराय रोहिला दोपहर 12.30 बजे। (3) मोतिहारी एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19269, राजकोट से पुरानी दिल्ली सायं 7:35 बजे। (4) जामनगर कटरा एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12477, राजकोट से नई दिल्ली सुबह 6:50 बजे। (5) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12915, अहमदाबाद से पुरानी दिल्ली प्रतिदिन सायं 6.30 बजे, अहमदाबाद तक बस द्वारा। (6) राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन न. 12957, अहमदाबाद से नई दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.40 बजे अहमदाबाद तक बस द्वारा।

माँ का पत्र बेटी के नाम

माँ का उपहार

□ कञ्चन आर्या

प्रिय बेटी,
आशीर्वाद!

आशा है ईश्वर की कृपा से आप कुशल होंगे। फोन पर हुई बातचीत से पता चल गया था कि होस्टल में आप दोनों के निवास आदि की अच्छी व्यवस्था हो गई है। चलो, आपका परिश्रम और बड़ों का आशीर्वाद सफल हुआ।

बच्चो! अब से आपके जीवन की नई शुरुआत है। अभी तक आप परिवार में रहते थे। स्कूल (विद्यालय) की नियमित और नियंत्रित दिनचर्या थी। अब आप पर परिवार और स्कूल का नियंत्रण लगभग समाप्त है। आप स्वतन्त्र रूप से रहना और जीवन व्यतीत करना सीखेंगे। हमारा आशीर्वाद है कि आप जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करें, परन्तु इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि अभी माता-पिता का आपके प्रति और आपका माता-पिता और परिवार के प्रति कर्तव्य समाप्त नहीं हुआ है। अब आप स्वतन्त्र तो हैं, परन्तु आपको स्वच्छन्द नहीं बनना है।

मेरे बच्चो, आपको अच्छी तरह याद होगा कि अनेक बार कोई गलत कार्य करने पर आपको टोक दिया जाता था और कई बार आपकी इच्छा न होने पर भी विशेष अवसरों पर यज्ञ एवं ईश्वर की प्रार्थना आदि आध्यात्मिक कार्य करने पड़ते थे। शिष्टाचार और आज्ञा-पालन के रूप में आपने न चाहते हुए भी इन कार्यों को किया, पर मैं नहीं चाहती कि कोई भी कार्य आप पर थोपा जाए और आप उसे बोझ एवं व्यर्थ का कार्य समझकर करें। आप शायद नहीं जानते कि बहुत अधिक पढ़-लिख जाने पर एवं आधुनिक सभ्यता में रच-बस जाने के बाद भी बच्चों की अपेक्षा बड़ों का अनुभव बहुत अधिक होता है। यह सदा याद रखना कि जीवन में अनुभव का विशेष महत्त्व होता है और माता-पिता यही धरोहर अपने बच्चों को सौंपना चाहते हैं। उनकी अभिलाषा रहती है कि जिन कमियों और भूलों के कारण हमने जीवन में असफलता प्राप्त की है, बच्चे उन कमियों से दूर रहें तथा उसी प्रकार की भूलें न दोहरायें। इसके साथ ही सफलता के जो सूत्र उन्होंने अपने जीवन में प्राप्त किये हैं, उन्हें वे अपनी अगली पीढ़ी को सौंप दें। आपकी माँ होने के नाते मैं अपनी जिम्मेदारी भली-भाँति समझती हूँ। हमारे शास्त्रों में तो माता का स्थान सबसे ऊपर गिनाया गया है। उसके अनेक कारण हैं, जो आप भली-भाँति जानते ही हैं। 'माता निर्माता भवति' (माता बच्चे के जीवन का निर्माण करने वाली होती है) यह उक्ति तो माँ के कर्तव्य को और अधिक बढ़ा देती है। बच्चो! आपने बताया था कि आपके पहले दो सत्रों में पढ़ाई का बहुत अधिक दबाव नहीं है, क्योंकि बहुत-सा कोर्स 12वीं कक्षा का ही है। इस अवसर का सदुपयोग करके मैं अपने इस कर्तव्य का पालन अच्छी तरह करना चाहती हूँ, जिससे आप इस संसार में लौकिक और पालौकिक दोनों ही दृष्टियों से खूब उन्नत एवं सफल बन सकें।

मेरे प्यारे बच्चो! आपने अपने मित्रों और अन्य युवकों के आचरण को देखकर अनुभव किया होगा कि अधिकतर युवापीढ़ी भौतिकवाद (materialism) में बुरी तरह उलझी हुई है। उनका मानना है कि इस दिखाई देने वाले शरीर (gross body) और भौतिक संसार (materialistic world) के अलावा और कुछ सत्य नहीं, यही सब कुछ है। अतः ये

बच्चे जीवन भर शारीरिक सुख-सुविधा, धन-सम्पत्ति आदि इकट्ठी करने और मौज-मस्ती करने में ही लगे रहते हैं। उनके लिए अध्यात्म (spirituality), धर्म (religion), परलोक और भारतीय संस्कृति का कुछ भी महत्त्व नहीं। उनकी दृष्टि में ये सब बेकार की बातें हैं। यही कारण है कि दिन-प्रतिदिन अपराध, असभ्यता, आत्महत्या, क्रूरता, बलात्कार आदि की घटनायें बढ़ती जा रही हैं। प्रायः युवापीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति (western culture) के प्रभाव में आकर अध्यात्म और धर्म को व्यर्थ का पाखण्ड और अन्धविश्वास ही मानती है। आप भी इस विचारधारा से कुछ सीमा तक प्रभावित थे। धर्म एवं इससे जुड़े कुछ विषयों को लेकर हमारे आपस में तर्क-वितर्क भी चलते रहते थे। इनसे सम्बन्धित आपकी कुछ शंकाओं का मैंने समय-समय पर समाधान करने की कोशिश भी की थी, परन्तु मुझे लगता है कि इस दिखाई देने वाले शरीर और संसार के परे भी क्या कुछ ऐसे पदार्थ विद्यमान हैं, जो दिखाई नहीं देते? यदि हैं, तो वे कैसे हैं? अध्यात्म और धर्म का असली स्वरूप क्या है और उसकी क्या आवश्यकता है? अपने तथा समाज के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है? इन सब बातों को आपको विस्तार से समझाना जरूरी है, जिससे आप इन सबका महत्त्व समझ सकें। बच्चो, मैंने युवापीढ़ी के इस दृष्टिकोण पर बहुत गम्भीरता से विचार किया और इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि इसमें आप लोगों का कोई दोष नहीं है। आपकी पीढ़ी को धर्म, अध्यात्म आदि के बारे में विद्यालय और बाहरी वातावरण से किसी प्रकार की शिक्षा नहीं मिल पाती। बहुत-से बच्चों को तो घर में भी माता-पिता यह शिक्षा नहीं दे पाते। अतः आज की युवा-पीढ़ी अपनी संस्कृति के मूल्य को बिल्कुल नहीं समझ पा रही। मैं चाहती हूँ कि अभी जब तक आपके ऊपर पढ़ाई का अधिक बोझ नहीं है, हम पत्रों के माध्यम से इन विषयों पर तर्कपूर्वक (logically) चर्चा (discussion) करते जायें। दिमाग पर दूसरा बोझ न होने के कारण आप अभी इन विषयों पर अच्छी प्रकार चिन्तन कर सकते हैं। और इसी आधार पर आप अपने इस नये जीवन को दृढ़तापूर्वक उचित दिशा भी दे सकते हैं। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, जीवन में कोई भी आचरण या बात जबरदस्ती नहीं थोपी जानी चाहिए। क्योंकि थोपा हुआ आचरण मनुष्य का अपना स्वभाव नहीं बन पाता और वह कहीं न कहीं कोई कुण्ठा (complex) बन जाती है। इस तरह व्यक्ति अपना पूर्ण विकास भी नहीं कर पाता। हम हरेक बिन्दु को तर्कपूर्वक और वैज्ञानिक आधार पर समझेंगे, जिससे हमारा जीवन सब ओर से खुशियों और असफलताओं से भर जाये।

आप दोनों ही बच्चे बहुत आज्ञाकारी, बुद्धिमान, महत्वाकांक्षी और खुल दिमाग के (broad minded) हैं, यह मैं जानती हूँ। एक माँ होने के नाते मैं आपकी सर्वांगीण उन्नति के साथ-साथ आपको देश के सफल और उपयोगी नागरिक के रूप में भी देखना चाहती हूँ। इसीलिए यह कदम उठा रही हूँ। अब आप विश्राम करो। टेलीफोन पर बात होती रहेगी और पत्रों का यह क्रम सप्ताह में एक बार चलेगा। इससे आपको चिन्तन का भी समय मिल जाएगा। आप अपने अन्य मित्रों से भी इन पत्रों के विषय में चर्चा अवश्य करेंगे, ऐसी मेरी आशा है।

—साभार: माँ का उपहार बेटी के नाम पुस्तक से

अरे भाई आप गलत ढंग से बैठे हैं?

- डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

‘अरे भाई, गलत ढंग से बैठे हैं आप ठीक से बैठिए।’
‘कैसे बैठा हूँ मैं? ट्रेन में तो ऐसे ही बैठा जाता है।’
‘अच्छा पहले यह बताइये कि आपको ट्रेन से जाना कहाँ है?’
‘महाशय, मुझे देहरादून से हरिद्वार जाना है।’
‘जाना है। आपको हरिद्वार पर उधर तो आपने पीठ की हुई है और छोड़ना है देहरादून को पर उधर आपने मुँह किया हुआ है।’
‘तो इससे क्या हो गया?’
‘भाई साहब, बहुत कुछ हो गया। इसी में जीवन का रहस्य छिपा हुआ है।’
‘क्या है वह रहस्य, हमें भी तो बताइये।’
‘बताएंगे, पहले आप ही मुझे यह समझाइये कि देहरादून से ट्रेन से आते समय खिड़की से आप क्या देख रहे थे?’
‘मैं देख रहा था देहरादून के दृश्य, जैसे उच्च अदालिकाएं, बगीचे, पेड़-पौधे, कारों, स्कूटरों और मोटरों की लम्बी कतारें।’
‘और क्या नहीं दिखाई दे रहा था आपको?’
‘हरिद्वार के दृश्य। वे दिखलाई नहीं दे रहे थे क्योंकि मैंने उधर पीठ की हुई थी।’
‘घूम-फिर कर जाना कहाँ है आपको?’
‘महाशय कितनी बार कह दिया है-हरिद्वार।’
‘तो फिर आपको हरिद्वार की ओर मुँह करने में क्या परेशानी है?’
‘भले ही मैंने हरिद्वार की ओर पीठ की हुई है पर मैंने पहुँचना तो हरिद्वार ही है।’
‘कल्पना करो, आपका मुँह मंदिर की ओर हो और कोई आपको पीठ की ओर से घसीटने हुए मंदिरालय की ओर ले जाय तो आपको कैसा लगेगा?’
‘बुरा लगेगा।’
‘और सुनिए। जिस लड्डू को आप खाना चाहते हैं यदि आपको पता चल जाय कि उसमें विष मिला हुआ है तो क्या आप उसको खाना चाहेंगे?’
‘बिल्कुल नहीं, मैं उनको छुऊँगा भी नहीं।’
‘अब आए आप रास्ते पर। यह तो पृष्ठ भूमि या बैक ग्राउण्ड थी। अब आध्यात्मिक दृष्टि से विचार करते हैं।’
‘आपको मर कर कहाँ जाना है?’
‘परलोक।’
‘पर परलोक की ओर तो आपने पीठ की हुई है।’
‘और छोड़ना क्या है आपको?’
‘इहलोक।’
‘इधर तो आपने मुँह किया हुआ है कितना बड़ा विरोधामास है।’
‘आपकी बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। सरल ढंग से समझाइये।’
‘कितनी विचित्र विडम्बना है कि इस समाज की बच्चा हो या बूढ़ा, स्त्री हो या पुरुष। मरना सबको है। फिर भी परलोक के बारे में मृत्यु के स्वरूप पर चिन्तन नहीं करने, विचार नहीं करते। अगर कोई करना भी चाहता है तो उसे रोक देते हैं, मानों मृत्यु कोई पिशाचिनी हो।’
‘और क्या कहना चाहेंगे आप इहलोक के बारे में?’
‘आपकी उम्र क्या होगी?’
‘लगभग सत्तर साल।’
‘फिर भी आपकी जीभ चाय की चुस्की लेना चाहती है, आँखें टी.वी. देखने से बाज नहीं आती। त्वचा को कोमल स्पर्श चाहिए। कानों को

फिल्मी संगीत सुनना है। नासिका भी कम नखरे वाली नहीं है उसे भी सूंघने के लिए परफ्यूम चाहिए। बताइये, सत्तर साल बीत जाने पर आपकी ज्ञानेन्द्रियों की भूख कम हुई?’
‘तो फिर मैं क्या करूँ, कैसे इनसे मुक्ति पाऊँ?’
‘जब तक तुम्हारा ज्ञानेन्द्रियों के इन विषयों से मोह बना रहेगा, तब तक तुम इहलोक के स्टेशन से आगे नहीं बढ़ सकते। आसक्ति तुम्हें इहलोक के आकर्षण की ओर खींचेगी और मृत्यु पीठ के बल पकड़ कर परलोक की ओर घसीटेगी।’
‘तो क्या ये ज्ञानेन्द्रियाँ और इनके विषम भी अन्तिम समय तक हमारा साथ नहीं देंगे?’
‘ज्ञानेन्द्रियाँ तो क्या शरीर भी साथ नहीं देगा। फिर भी हमारा मोह बना रहता है। हम घर से बाहर निकलते हैं तो भले ही आत्मा कलुषित हो पर शरीर सजा संवरा रहता है। असली दाँत टूट चुके हों पर नकली दाँत चमकते रहते हैं। आँखों से न दिखाई देता हो पर कमानादार सुनहरा चश्मा दूर से ही चमकता रहता है। भले ही कैसे चलते हुए पैर काँप रहे हों पर पैरों पर महंगे, चमकते हुए जूते अपनी मजबूत पकड़ बनाए रखते हैं।’
‘बात तो आप ठीक कहते हैं पर मुझे करना क्या है?’
‘ठीक से बैठना सीखिए।’
‘मतलब।’
‘सत्य को स्वीकार करना सीखिए।’
‘सत्य क्या है? सत्य यह है कि धन-दौलत जो क्या एक दिन शरीर भी साथ छोड़ जाएगा।’
‘तो फिर हमें करना क्या है?’
‘जिस शरीर ने साथ छोड़ना है, उससे अभी से दूरी शुरु कर दें। मोह या असक्ति छोड़ दें और जिसको अब तक अपना नहीं बना सके उसके प्रति जिज्ञासा और आस्था का भाव प्रकट कर दें।’
‘यह बोलना तो बहुत सरल है पर करना बहुत कठिन है।’
‘जानते हो क्यों? क्योंकि हम जन्म जन्मान्तरों से नाना शरीर धारण करके वासनाओं को झोले ढोते आ रहे हैं। शरीर बदलते रहते हैं पर वासनायें चिर युवा बनी रहती है और तो रहा ये सूक्ष्म शरीर पर भी चिपकी रहती हैं। शरीर को दास बना कर रखती हैं। बताइये क्या कहेंगे आप इसे, पेट भरा है फिर भी जलेबी खाने की चाह।’
‘मैं फिर पूछता हूँ, कैसे मिलेगी इन मैली-कुचैली वासनाओं से मुक्ति?’
‘मेरी बात का जवाब दो। जब कोई कपड़ा बहुत गंदा और बदबूदार हो जाता है तब आप क्या करते हैं?’
‘हम उसे गर्म पानी में डालते हैं, सर्फ में खंगालते हैं और थापी से पीटने हैं। यहाँ भी आप ऐसा ही कीजिए।’
‘मतलब?’
‘जीवात्मा को साधना के गर्म पानी में डालिए, भक्ति के सर्फ में खंगालिए तथा प्रणव ध्वनि की थापी से थपथपाइये। फिर देखिए कैसा निखार आता है?’
‘मुझे और कुछ भी पूछना है।’
‘बन्द कीजिए अब पूछना। मुखरता की अपेक्षा मौन अधिक मुखर होता है। इस मौन को पचाइये।’
‘ठीक है, मैंने सत्य का साक्षात्कार कर लिया है।’

-230, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर (हरिद्वार), मो. 9639149995

युवाओं के लिए भोजन कब, क्या और कैसे?

□ स्व.स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

भोजन के सम्बन्ध में कितना सुन्दर कहा गया है—**प्राण प्राणभृतामन्न तदयुक्त्वा हिनस्त्यसूनु।** प्राणियों के लिए अन्न अमृत है, परन्तु वही अन्न अयुक्तापूर्वक सेवन किया जाए तो विष बन जाता है। अतः स्वस्थ रहने के लिए भोजन का ज्ञान आवश्यक है। भोजन के सम्बन्ध में मुयतः पांच बातों पर ध्यान देना चाहिए—

(1) **क्या खाएँ?**—एक वाक्य में इसका उत्तर यह दिया जा सकता है **‘हिताशी स्यात्’**—मनुष्य को हितकर पदार्थों का सेवन करना चाहिए। भोज्य पदार्थों को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है—

(क) कुछ वस्तुएँ ऐसी होती हैं जिन्हें विष के समान सर्वथा त्याग देना चाहिए। ऐसी वस्तुएँ हैं अफीम, कोकीन, गाँजा, चरस, तम्बाकू और मद्य।

(ख) कुछ ऐसे हानिकर द्रव्य हैं जिन्हें बुद्धिमान् लोगों को सेवन नहीं करना चाहिए। यदि आपने उनके सेवन करने की आदत डाल ली है तो उनके प्रयोग को शीघ्र छोड़ दो। ऐसी वस्तुएँ हैं शराब, चाय, कॉफी, काको, पान, तम्बाकू और मांस आदि।

विद्यार्थियों और ब्रह्मचारियों को मिर्च, गुड़, तैल, खटाई, लहसुन, प्याज और मांस आदि का सेवन कदापि नहीं करना चाहिए। ये कामोत्तेजक हैं। इनका सेवन करने से बुद्धि बिगड़ती है। सोडा, लैमन, बर्फ, चाय, कॉफी, कहवा इनका प्रयोग भी मत करो! अण्डे, मांस और मछली मनुष्य का भोजन नहीं, पशुओं का भोजन है। इनसे पृथक रहो! मनु जी ने भी कहा है, **“वर्जयेन्मधु मांस च”** (2/177)—शराब और मांस छोड़ देना चाहिए। सिगरेट, तम्बाकू, भंग, चरस, गाँजा, अफीम आदि का भूलकर भी सेवन मत करो। यदि सिगरेट आदि पीते हो तो आज ही छोड़ दो!

“धूम्रपान मानसिक कार्य-क्षमता को कम करता है, विशेषकर विद्यार्थियों में। यह जीवन को नष्ट करने वाला दोष है। तम्बाकू और विशेषकर सिगरेटों का सेवन एक प्रकार का विष है जो मस्तिष्क, हृदय, ज्ञानतन्तुओं और गुदों पर बुरा प्रभाव डालता है।”

कुछ लोग चाय के दास होते हैं। वे प्रातः दोपहर और सायं चाय अवश्य पीते हैं। वे चाय के बिना रह नहीं सकते और न कोई कार्य ही कर सकते हैं। यह बहुत बुरी आदत है और शीघ्र छोड़ देनी चाहिए।

आज मांस का प्रचार बढ़ रहा है। यह मनुष्य का भोजन नहीं है। भारतीय और पाश्चात्य सभी विद्वानों ने इसकी निन्दा की है।

डॉ. हैग महोदय लिखते हैं— मांस-भक्षण सुस्ती लाता है, क्योंकि इसके सेवन से मस्तिष्क, मांसपेशियों, हड्डियों तथा सारे शरीर में रक्त का प्रवाह मन्द तथा न्यून हो जाता है। रक्त-प्रवाह की यह मन्दता और न्यूनता यदि जारी रहे तो परिणाम में स्वार्थपरायणता, लोलुपता, भीरुता, अधःपतन, हास और अन्त में विनाश निश्चित है।

मांसाहार तामसिक भोजन है। मांसाहारी व्यक्ति में क्रूरता, क्रोधादि पाशविक वृत्तियाँ स्थान कर लेती हैं। कामवासना उत्तेजित होती है। व्यभिचार करने और मदिरा पीने की इच्छा होती है। मांस खाकर सदाचारी रहना असम्भव है। अतः मांस का सेवन कदापि नहीं करना चाहिए।

(ग) कुछ वस्तुएँ लाभदायक होती हैं और जीवन के लिए आवश्यक हैं, परन्तु उनका प्रयोग परिमित मात्रा में करें। इनमें मक्का,

बाजरा, गेहूँ, चावल, पनीर, मक्खन, क्रीम और दालें आदि सम्मिलित हैं।

(घ) कुछ वस्तुएँ लाभदायक होती हैं और पर्याप्त मात्रा में ली जा सकती हैं। इनमें दूध, दही, सभी प्रकार के फल, अंगूर, अंजीर, केला, टमाटर, सन्तरा, सेब, नाशपाती, साग-पात, मूली, गाजर आदि पदार्थ सम्मिलित हैं।

फलों की प्रशंसा करते हुए किसी ने ठीक ही कहा है—

फल प्रकृति द्वारा सूर्य की रसोई में तैयार किए हुए स्वनिर्मित स्वादिष्ट भोजन हैं।

प्रतिदिन पर्याप्त मात्रा में हरी सब्जियों का सेवन कीजिए और सदा जवान रहिए। प्रतिदिन 14 गाजरों के रस का प्रयोग कीजिए और फिर उसका परिणाम देखिए।

सदा शुद्ध, सात्विक, सादा एवं ताजा भोजन करना चाहिए। राजसिक और तामसिक भोजन नहीं करना चाहिए। सबसे श्रेष्ठ भोजन **“क्षीर-घृताभ्यासो रसायनानां श्रेष्ठतमः”** दूध और घी का सेवन है। अन्नों में जौ सर्वश्रेष्ठ और सात्विक है। इसके सेवन से मधुमेह नहीं होता। सदा हितकारी पदार्थों का ही सेवन कीजिए। जो पदार्थ, शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के लिए हितकर हैं, उन्हें ही खाइए। चटनी, आमपापड़, आइसक्रीम और गोलगप्पे खा-खाकर अपने शरीर का नाश मत करो।

(2) **कितना खाएँ?**—अब तक हमने “क्या खाएँ” के सम्बन्ध में लिखा। अब हम भोजन के सम्बन्ध में दूसरे प्रश्न को लेते हैं “कितना खाएँ?” इसका उत्तर है **“मिताशी स्यात्।”** थोड़ी मात्रा में खाइए। खाद्य पदार्थ चाहे कितने ही पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक हों, यदि उनका सेवन उचित और परिमित मात्रा में नहीं किया जाता तो वे हानिकारक सिद्ध होते हैं।

मित भोजन से मनुष्य किस प्रकार अपने खाए हुए स्वास्थ्य को प्राप्त कर नीरोग एवं स्वस्थ रह सकता है, इस विषय में इटली के लूईमो कारनेरो के जीवन को सदा स्मरण रखो। उसने अपने भोजन को कम करके पुनः अपने खोए हुए स्वास्थ्य को प्राप्त कर लिया था और 104 वर्ष की आयु पाकर मरा।

किसी भोजन-अनुभवी ने ठीक ही लिखा है कि मित भोजन कीजिए! थोड़ी मात्रा में खाइए! हितकर पदार्थों को भी कण्ठ तक ढूँँस-ढूँँसकर मत भरिए! अधिक खाने से आलस्य आता है, आयु घटती है और ब्रह्मचर्य का नाश होता है।

(3) **कब खाएँ?**—सीधा और स्पष्ट उत्तर है जब भूख लगी हुई हो। कालभोजी बनें। समय पर भोजन करें। हर समय बकरी की भाँति मुख न चलाते रहें। हर समय खाते रहना स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत हानिकारक है। जब भूख खूब लगे, उसी समय भोजन करना चाहिए। भूख लगने पर सूखी रोटियों में जो आनन्द आता है, वह पेट भरे होने पर खीर, हलवा और पूरी में भी नहीं आता।

भोजन दो ही समय करना चाहिए— **नान्तरा भोजनं कुर्यादग्निहोत्रसमो विधि।** (भावप्रकाश 5/116)

अग्निहोत्र की भाँति दो ही समय भोजन करना चाहिए। पहला लगभग 12 बजे और दूसरा सायंकाल 6 बजे और सात बजे के मध्य

में। दोनों भोजनों के मध्य दूध, लस्सी, शर्बत आदि पेय पदार्थों का निषेध नहीं है।

(4) **क्यों खाएँ?**—हम भोजन क्यों खाएँ? भोजन करने का वास्तविक प्रयोजन यह है कि मनुष्य जीवित रहता हुआ परमात्मा के भजन से अपना जीवन सफल करे, परन्तु लोग मूर्खतावश यह समझते हैं कि मनुष्य जीवन केवल खाने-पीने के लिए मिला हुआ है।

यह अमूल्य मानव-जीवन खाने-पीने और भोग-विलास के लिए नहीं मिला। भोजन करने का उद्देश्य है अपने शरीर को स्वस्थ, निरोग और बलवान् बनाना। परिमित मात्रा में खाया हुआ भोजन ही हमें आरोग्य प्रदान कर सकता है। बुद्धिमानों का कथन है— जीने के लिए खाओ! खाने के लिए मत जियो! स्वाद के लिए मत खाओ!!

(5) **कैसे खाएँ?**—इस प्रकार खाओ कि भोजन को पचाने में जठराग्नि को कम-से-कम श्रम करना पड़े। यह तभी सम्भव है जब भोजन को खूब चबाकर खाया जाए हमारे मुँह में 32 दाँत होते हैं, अतः प्रत्येक ग्रास को 32 बार तो चबाना ही चाहिए। भोजन को इतना चबाना चाहिए कि चबाते-चबाते वह दूध की भाँति पतला हो जाए, तभी उसका घूँट गले से नीचे उतारना चाहिए।

जब भोजन की थाली आपके सामने आए तो उसे देखकर नाक-भौं मत सिकोड़िए। भोजन की निन्दा करने से उत्तम-से-उत्तम अन्न भी अंग नहीं लगता। अतः—

**पूजयेदशनं नित्यमद्याचैतदकुत्सयन्।
दृष्ट्वा हष्येत्प्रसीदेच्च प्रतिनन्देच्च सर्वशः॥**

(मनु. 2/54)

नित्य भोजन का पूजन करना चाहिए और बिना निन्दा किए खाना चाहिए। भोजन को देखकर हर्षित होना चाहिए और प्रसन्नतापूर्वक उसका अभिनन्दन करना चाहिए। श्री हरदयाल, एम.ए. ने लिखा है— भोजन के समय प्रसन्नता भी हमारा अतिथि होना चाहिए। डा. मैकल महोदय लिखते हैं— भोजन के समय बहुत पानी पीना हानिकारक है, परन्तु बिल्कुल पानी न पीना भी हानिकारक है। घूँट-घूँट करके भोजन के बीच पानी पीना लाभदायक है।

अपना जूठा भोजन किसी को नहीं देना चाहिए और न किसी का जूठा भोजन स्वयं खाना चाहिए।

शोक, क्रोध, भय और श्रम की अवस्था में भोजन नहीं करना चाहिए। इन अवस्थाओं में खाया हुआ भोजन अत्यन्त हानिकारक होता है। भोजन के पश्चात् कुल्ला करके मुँह को अच्छी प्रकार शुद्ध कर लें। इससे मुख से दुर्गन्ध नहीं आती, दाँत दृढ़ रहते हैं।

स्वास्थ्य-रक्षा के लिए सप्ताह में एक समय उपवास भी लाभकारी है। इस उपवास से अजीर्णता और पेट के अन्य विकार ठीक होते हैं। भोजन करने के पश्चात् हाथ धोकर गीले हाथों को मुख और आँखों पर फेरें। इससे नेत्र-ज्योति बढ़ती है।

भोजन के पश्चात् लघुशंका अवश्य करें। इससे एक तो शरीर की अनावश्यक गर्मी बाहर निकल जाएगी, दूसरे मधुमेह और गुर्दे का दर्द नहीं होता।

भोजन के पश्चात् 15-20 मिनट तक पढ़ना अथवा परिश्रम का कार्य नहीं करना चाहिए। भोजन करते ही पढ़ने से आँखों की ज्योति कम होती है।

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल

शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब)

दूरभाष:- 91-9814629410

(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

प्रवेश सूचना

सत्र 2020-2021

छठी कक्षा में (आयु+9 से-11 वर्ष से) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/-रूपये) भरकर 31.03.2020 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)

- ❑ कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 05 अप्रैल 2020 दिन रविवार को प्रातः 8:00 बजे होगी।
- ❑ सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

मोहन लाल कालड़ा, मैनेजर

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

केवल व्यक्तिगत ही नहीं संस्थाएं भी सदस्य बन सकती हैं।

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहाँ कई वर्षों से पधार रहे हैं यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या
(उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल
(मन्त्री)

देव दयानन्द के दीवाने

मुझे पिछले वर्ष एक विद्वान व्यक्ति से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनका नाम दक्ष भारद्वाज है, वह स्वामी दयानन्द जी के उपदेशों और विचारों के अनुयायी हैं, कट्टर आर्य समाजी हैं।

मैं आपको श्री दक्ष भारद्वाज का परिचय देता हूँ। वह एक प्रसिद्ध वास्तुकार है पर एक वैदिक विप्र भी है, इन्होंने अपने माननीय पिताजी डॉ. सत्यकाम भारद्वाज जिन्होंने स्वामी दयानन्द जी के मौलिक कर्म वेदों के असली मन्त्रों के अनुवाद का मौलिक कर्म और पण्डित गुरुदत्त जी के काम को आगे बढ़ाया है विशेष रूप से जो वेदों में विज्ञान से सम्बन्धित भरपूर विद्या है।

हम जब कई बार मिलकर गोष्ठी करते हैं तो वह सदा एक और चीज पर बार बार बल देते हैं कि कई हजार वर्षों के पश्चात् जिसने वेद की संस्कृति का सही रूप, मूर्तिवाद, वातमार्गियों और पौराणिक कथाओं में सूर्य ढक गया था, ऋषि दयानन्द जी ने आकर इस घोर अन्धकार को छिन्न भिन्न किया और वेदों के सत्य रूप का मार्ग दर्शन दिया।

परन्तु दक्ष जी को यह खेद है कि उसके उपरान्त आर्य समाज ऋषि दयानन्द जी के सद वचन और दृष्टिकोण पर आगे नहीं बढ़ा सका केवल बड़े बड़े भवन बनाए और स्वामी जी के सन्देश देश विदेशों में प्रचार किए, यह प्रशंसा योग्य है परन्तु स्वामी जी की खास कुशलता वेदों का सत्य रूप और विद्या का आगे कोई काम नहीं किया है अब आर्य समाज केवल हवन और यज्ञ कराने तक ही सीमित रह गई है।

दक्ष जी का मानना है कि वेद हर प्रकार के विज्ञान से भरपूर है और जब तक वेद मन्त्रों और उपनिषद् आदि ग्रंथों के सही अर्थ नहीं समझाये जायेंगे तो यह नई पीढ़ी को इन ग्रंथों में कोई रूचि नहीं होगी। वह यह भी कहते हैं कि उनका सम्पर्क 20 वर्ष से 40 वर्ष के लड़के लड़कियों से होता है, जो विभिन्न क्षेत्रों से हैं, जैसे डाक्टर, चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट, इंजीनियर इत्यादि। वह बहुत इच्छुक हैं वेद उपनिषद् आदि ग्रंथों के ज्ञान में परन्तु अनुवाद जो मिलते हैं वह असंगत तथा अवैज्ञानिक हैं इस कारणवश उनको उनको वह रूचिकर नहीं लगते।

दक्ष जी ने बताया, सत्य यह है कि वेद की भाषा संस्कृत नहीं है, वेद की भाषा भाषा है जो अति विशाल और लचीली है और संस्कृत उससे निकली है जो सीमित है इस कारणवश मन्त्रों का अनुवाद संस्कृत से किये जाने पर उनका अर्थ गलत, अवैज्ञानिक और कई बार अश्लील होते हैं। उनका यह भी कथन है कि वेदों को छोड़कर हमारे सारे ग्रन्थ, समय के साथ, दूषित होते गये, जिसका परिणाम पुराण और मूर्ति पूजा इत्यादि हैं।

वैदिक भाषा के अर्थों का विशाल रूप और उन्हीं शब्दों का सीमित रूप मुझे उन्हीं उदाहरण के लिए कुछ शब्द और मन्त्रों का अर्थ दिया जो कुछ निम्नलिखित हैं, आत्मा, हृदय, मदिरा, राक्षस, कृष्णा।

आत्मा-अत सत्यातगमने, न रूकने वाली गति धातुपाठ भवादिगण।
मदिरा-मदि-स्तुति मोद मद स्वपन कान्तिगतिषु (रा-दाने धातुपाठ अदादिगण)

हृदय-हृज हरणे धातुपाठ भवादिगण, दा डुदाज दाने धातुपाठ तुदादिगण

राक्षस-रा-दाने धातुपाठ अदादिगण

क्षर=सजचलने

क्षि= क्षये, एक यन्त्र या व्यक्ति जो गति दे सके

कृष्णा-कृष्णा=आकर्षणम् उणदिकोष 1/145

हरितः कृष्णो वा

एक और उदाहरण- अथर्ववेद का मन्त्र है:-11-5, पूर्वा जातो ब्रह्मणो ब्रह्मचारी (अथर्ववेद 11-5)

ब्रह्मचारी शब्द का अर्थ जो समझा जाता है वो व्यक्ति जिसका विवाह नहीं हुआ हो। वेद की भाषा के अनुसार ये अर्थ सीमित नहीं हो सकता। केवल सामाजिक विषय में इसका प्रयोग करना सही है।

इस शब्द के अर्थ ब्राह्मण cosmos के विषय में भी उपयोग होते हैं। अथर्ववेद 11-5 का एक पूरा सूक्त ब्रह्मचारी में हैं। उसके अनुसार इस शब्द के कई निकलते हैं। उदाहरण के तौर पर 5 मन्त्र में- ब्रह्मचारी शब्द के दो भाग होते हैं। ब्रह्म+चर

ब्रह्म का अर्थ है कि जिसकी वृद्धि हो और पूर्ण या अधिक वृद्धि हो (पाणिनि) इस अर्थ का इस प्रकार से वर्णन करते हैं। बृ उणदिकोष 4/147 बृंहति वर्धते तद् ब्रह्म, ईश्वरो वेदस्तत्त्व तपो वा।

चर का अर्थ धातुपाठः चर गत्यर्थाः चरति भक्षणोऽपि।

अर्थात् गति में।

इन दोनों शब्दों के अनुसार इसका अर्थ इस प्रकार से बनता है कि ब्रह्मचारी जिसके द्वारा किसी चीज की गति से गति या गति के द्वारा पूर्ण वृद्धि या महावृद्धि पहुंचे, सम्पूर्ण वृद्धि पहुंचे। (बृह+चर)

इसका अभिप्राय ये भी है कि किसी भी कारण या किसी के द्वारा वृद्धि हो किसी भी क्षेत्र में हो, वह मनुष्य या योजना जिसके कारण वृद्धि हो वह व्यक्ति, योजना ब्रह्मचारी कहलाता है।

ये मन्त्र अगर सामान्य संस्कृत में देखें तो उसका अर्थ ये निकलता है कि cosmos ब्राह्मण के जन्म से पहले ब्रह्मचारी का जन्म हुआ (ये अर्थ मन्त्र का किसी प्रकार भी भाता नहीं)।

उनके ध्यान में इस मन्त्र का अर्थ है यह है-अर्थ सबसे पूर्ण ब्राह्मण (cosmos) को बनाने के लिए वृद्धि का सबसे पहले एक नियोजन हुआ और जिसमें गति का होना बहुत आवश्यक था, उसके उपरान्त ब्राह्मण का जन्म हुआ।

वह पीड़ित होकर कहते हैं 'देखिए वेदों के साथ कितना अनर्थ हो रहा है। आई आई टी कानपुर ने एक खास विभाग खोला है संस्कृत और वेदों के लिए, दक्ष जी ने उनके डायरेक्टर को इस मन्त्र का क्या अर्थ है दो बार पूछा परन्तु कोई उत्तर नहीं आया-आता भी कैसे? क्योंकि संस्कृत का अनुवाद यही है।

दक्ष जी ने ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी के असली रूप पर लिखा है, हनुमान, 33 देवता का असली रूप क्या है? वह जहां स्थित है उसका क्या महत्व है, आदित्य क्या है, रूद्राक्ष माला का क्या तात्पर्य है यज्ञ हवन का यही महत्व क्या है।

उन्होंने मुझे तो सही अर्थ का ज्ञान समझाया यह सब विश्व की रचना के सम्बन्धित है यदि इनका अनुवाद भाषा से किया जाये। मैंने देखा हे वह अति दुखित होते हैं जब मन्त्रों का अनुवाद अवैज्ञानिक होता है। रूढ़ीवादी अनुवाद जो कई Maculdy जैसे कर गये जिनके डॉ. राधा कृष्ण जैसे भी पालन करते रहें और क्योंकि आजकल के भी पण्डित

उसी रीत में चल रहें हैं तो वेदों का कभी उधार नहीं होगा।

हमारे आचार्यों को सबसे पहले भाषा का ज्ञान प्राप्त करना पड़ेगा फिर आगे मन्त्रों का अनुवाद करके विद्या दान करनी पड़ेगी। एक ओर उनका कहना है कि जो हमारे संस्कृत के विद्वान हैं वह वैज्ञानिक नहीं है वह संस्कृत नहीं जानते। हमारे ऋषि दोनों में सम्पूर्ण थे इस कारणवश वह शिष्यों को पूरा ज्ञान दे पाते थे। यह विधि हमारी आजकल की विद्या की प्रणाली नहीं है। एक विद्यार्थी या तो विज्ञान पढ़ता है या कला आर्ट इत्यादि।

अब मैं आपको दक्ष जी के पूर्वजों की विषय में कुछ विशेषताएँ बताने जा रहा हूँ:-

डॉ. सत्यकाम भारद्वाज- MBBS, ENT ZEUNG VIENNA सितम्बर 07.09.1990 नवम्बर 13.11.2000। ये डॉ. चरञ्जीव भारद्वाज FRCS MRCP DTPH एडिनबरा 06.06.1872 से 08.05.1915 के पुत्र थे।

ये दोनों महानुभाव वैदिक मूल्यों और ज्ञान विज्ञान के आधुनिक प्रवर्तक थे। डॉ. चरञ्जीव भारद्वाज ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की सुविख्यात यु प्रवर्तक रचना सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद "LIGHT OF TRUTH" 1904 ई. में किया था जब वे एडिनबरा में थे। दुर्भाग्यवश उनका जीवनकाल बहुत संक्षिप्त रहा और वे मात्र 43 वर्ष की आयु में 1915 ई. में इहलोक का त्याग कर दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के अत्यन्त प्रसिद्ध शिष्य पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी ने डॉ. चरञ्जीव भारद्वाज को परामर्श दिया कि वैदिक साहित्य के मूलतत्त्व को प्रकाशित करने का कार्य करें। इससे उत्साहित होकर उन्होंने अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण एक वर्ष रंगून में तथा चार वर्ष मौरिशियस में वैदिक साहित्य की लौ को प्रज्वलित करने तथा आर्य समाज को वहाँ स्थापित करने में लगाया।

उन्होंने हजारों सनातनी विशेष रूप से जो वहाँ मजदूर का कार्य करते थे उन्हें शिक्षित करने का कार्य किया। उन्हें अपनी वैदिक संस्कृति पर गर्व करना सिखाया। उनको अपनी जाति और प्राचीन धर्म पर गर्व करना सिखाया। हम आज भी उनके पदचिन्हों पर तथा किये गए कार्यों को वर्तमान मौरिशियस के राजनैतिक एवं सामाजिक नेतृत्व में देख सकते हैं। वे आज भी 100 वर्षों के बाद उनके कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं।

डॉ. सत्यकाम भारद्वाज बहुत प्रतिभाशाली थे। एक तरफ वे जहाँ प्रतिष्ठित मेडिकल डॉक्टर थे। वहीं दूसरी ओर उनकी रूचि एवं जिज्ञासा नाभिकीय भौतिकी तथा एक दर्जन से अधिक भाषाओं का ज्ञान

था जिसमें जर्मन, फ्रेंच, लैटिन इत्यादि थे। इन विशाल ज्ञान भंडार के कारण उन्होंने शास्त्रों विशेष रूप से वेदों के वास्तविक अर्थों की व्याख्या करते रहे।

वेद की भाषा व्यापक, लचीली और मन्त्र का क्या विषय है इस पर उसका अनुवाद करना चाहिए ना कि संस्कृत से, जो कि भाषा से निकली है, वह अति सीमित है, तो उन मन्त्रों का अर्थ गलत हो जाता है।

दक्ष जी का अनुरोध है कि लोग उनके साथ फाउंडेशन में मिलें और वेदों के सत्य को विश्व के सामने प्रकट करें क्योंकि वेद एक धर्म या इतिहास की पुस्तक नहीं है वह एक ज्ञान की पुस्तक है।

वेद की धातु है विद्-ज्ञाने। अर्थात्-ज्ञान।

यदि आपको कुछ प्रश्न पूछने हो आप उनको लिखें, क्योंकि उनका मानना है कि जब ऋषि को हजारों साल पहले प्रश्न किया गया कि 'जब ऋषि नहीं रहेंगे तो फिर आगे किस तरह बढ़ेंगे?' तो उत्तर मिला 'तर्क वितर्क' यह व्यवस्था दुर्भाग्य से समाप्त हो गई है। वह यह कहते हैं कि वह तो एक विद्यार्थी हैं, थे और रहेंगे क्यों हम प्रतिदिन तर्क वितर्क के कारण विप्रों से मिलकर विद्या ग्रहण करते हैं।

दक्ष जी ने यह भी कहा है कि आगे भी वह इन विषयों पर यानि मन्त्रों आदि जो कि भाषा से अनुवाद किए हुए हैं उसके और भी उदाहरण देंगे, परन्तु यह ध्यान में रखना चाहिए कि यह सब अनुवाद जो हो चुके हैं वह होंगे वह डॉ. सत्यकाम भारद्वाज की संपत्ति होगी।

पं. लक्ष्मीकांत जी

शिष्य श्री अनूप जालूटा जी

दिल्ली एवम् मुम्बई में आपकी

आर्य समाजों/ शिक्षण संस्थानों में
वार्षिकोत्सव/साप्ताहिक सत्संग एवम्
प्रार्थना सभा (क्रिया/ उठाला) हेतु
प्रेरणादायक भक्ति संगीत के
लिए उपलब्ध।



सम्पर्क करें- मो. 9897666491, 9868418419

टंकारा समाचार के सम्पादक इनके संगीत से प्रभावित है

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहाँ एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 7000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिसमें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

અમારી જિંદગી

તીર્થાની આંખમાં આંસુ એઈ પ્રતીક બોલી ઊઠ્યો, 'તીર્થા, હું જ્યારે જાઉં ત્યારે તારું હસતું મોં જોઈને જવા માંગુ છું. જ્યારે પણ હું આંખ બંધ કરું ત્યારે મારી સમક્ષ તારો હસતો ચહેરો જ દેખાવો જોઈએ. જ્યારે રાજ-મહારાજાઓ યુદ્ધમાં જતા ત્યારે તેમની પત્ની આરતી ઉતારી, માથે વિજયનું તિલક કરીને વિદાય આપતી. ત્યારે તેમના મનમાં દૃઢ વિશ્વાસ હોય છે કે એમનો પતિ યુદ્ધ જીતીને જ આવશે. એમાં તો યુદ્ધ મેદાનમાં શહીદી પણ મળતી હોય છે અને તીર્થા, એક તું છે કે જ્યારે તારો પતિ માત્ર એક જ વર્ષ માટે જાય છે.'

તમારી વાત સાચી, તમે જતા હશો ત્યારે તમારી આરતી પણ ઉતારીશ. તમને તિલક પણ કરીશ પણ એ પત્નીઓ પાસે આખી પ્રજા પડખે ઊભી હોય. જ્યારે આ શહેરમાં તો મારું કોઈ જ નથી. તમારા ગયા પછી મારે વાત પણ કોની જોડે કરવી? આપણે લગ્ન કર્યા એ વાત મારા પિયરિયાને પસંદ નથી તેથી તેમણે આપણી સાથે સંબંધ તોડી નાખ્યા છે. તમારે તો માબાપ કે ભાઈબહેન પણ નથી. તમે જ મને કહેલું કે, હું તને નોકરી નહીં કરવા દઉં, કારણ મારી પત્ની કોઈને 'સાહેબ' કહે એ મને પસંદ નથી.

'આ અજાણ્યા શહેરમાં હું શું કરું? કહેતાં તીર્થા રડી પડી. 'તીર્થા, આપણી જિંદગીમાં દુઃખ અને આંસુનો પ્રવેશ વર્જિત છે. આપણી જિંદગી એટલે માત્ર અને માત્ર સુખ જ જોઈએ. હું તને સુખી કરવા આ ઘરમાં લાવ્યો છું. તારા આંસુ જોવા નહીં.'

જેમ જેમ પ્રતીકના જવાનો દિવસ નજીક આવતો ગયો એમ એમ તીર્થા ઉદાસ રહેવા લાગી. એને થતું કે મારી આ જિંદગી શું કામની? ભગવાને આટલી સુંદર જિંદગી આપી છે તો કોઈકના કામમા આવવું જોઈએ, તીર્થા ભગવાનને પ્રાર્થના કરતી કે મારી જિંદગી કોઈકની જિંદગીમાં કામ લાગે.

ક્યારેક એવું બને છે કે તમે સાચા દિલથી કરેલી પ્રાર્થના ઈશ્વરને સાંભળવી જ પડે છે. તીર્થા સાથે પણ એવું જ થયું. સવારે છાપું ખોલ્યું ત્યારે એમાંથી એક જાહેરાતનો કાગળ નીચે પડ્યો. એ ઉપાડીને વાંચ્યો, એ સાથે જ એની આંખમાં ચમક આવી ગઈ. પ્રતીક સામે જોતા 'બોલી, આ માટે તમે સંમત થશો?' જાહેરાતનું સરનામું બાજુની સોસાયટીનું જ હતું. એક સીત્તેર વર્ષના માણ સાથે આખો દિવસ રહેવાનું હતું. તીર્થાએ જક પકડી, 'મને કંઈક કામ કરવા દો, આપણી જિંદગી એ માત્ર આપણી નથી બીજાના કામમાં પણ આવવી જોઈએ. આપણે રાત્રે જ આ સરનામે જઈશું. મને ના ન કહેશો. તમને એ માણસો વ્યવસ્થિત તો જ હા પાડાએ.

રાત્રે તીર્થા અને પ્રતીક એ સરનામે પહોંચ્યા ત્યારે એક વૃદ્ધા હીંચકા પર બેઠેલા હતા. દેખાવ પરથી તો એ સંસ્કારી લાગતા હતા. વાતચીતમાં પણ ખૂબ નસ હતાં. એમના હાથે લકવા થઈ ગયેલો. કપડાં જાતે પહેરી શકતાં ન હતાં. માથું ઓળી શકતાં ન હતાં. એ ચાલી તો શકતાં હતાં પરંતુ એમને ચાલવા માટે કોઈકનો આધાર જોઈતો હતો. ઘર પણ પૈસેટકે સુખી હતું. તોથી જ તીર્થાએ અને પ્રતીકે હા કહી દીધી. પૈસાની બાબતમાં તો ખાસ રકઝક ના થઈ. એમણે જ રકમ કહી એ સ્વીકારી લીધી. બીજા જ દિવસે પ્રતીક એક વર્ષ માટે અમેરિકાજવા રવાના થયો ત્યારે તીર્થાના મોં પર સંતોષ હતો. પ્રતીકે કહ્યું 'હું દરરોજ તને ફોન કરતો રહીશ. ફોન પર તારો હસતો ચહેરો જોતો રહીશ. તું આંખો બંધ કરીને ખોલીશ ત્યાં સુધી એક વર્ષ પતી ગયું હશે.' તીર્થાએ સવારે ઉઠીને ઈશ્વરને પ્રાર્થના કરી કે 'હું મારું કામ પૂરી નિષ્ઠાથી કરું, હું એ વૃદ્ધાને ખુશી આપી શકું. ઈશ્વર, તમે મને આશીર્વાદ આપો.'

તીર્થા ગઈ ત્યારે વૃદ્ધાએ એને પ્રેમાળ આવકાર આપ્યો. તીર્થાએ પગે લાગતા કહ્યું, 'મને તમે પોતાની દીકરી સમજીને રહેજો. મારે તો કોઈ નથી. તમે મારી મા બનીને રહેજો.'

વૃદ્ધા સ્તબ્ધ બની ગઈ. અત્યાર સુધી ઘણી બધી બાઈઓ આવી અને ગઈ. બધીય માત્ર પૈસાની જ વાતો કરતી, જ્યારે તીર્થાએ તો પ્રેમની વાત કરી. એ સાથે જ એમના મનમાં એક આશા બંધાઈ કે હવે મને સારું થઈ જશે. મારી બંને દીકરીઓ પરણીને દૂર જતી રહી છે. એક દીકરો છે જે અહીંથી માત્ર પાંચ મિનિટના રસ્તે છે. પણ એનું કહેવું છે કે અમારી પણ ઉંમર થઈ છે. પચાસ વર્ષ થયાં અમને, વહેલી નોકરી છોડી દીધી છે અમે. અમારી રીતે અમારી જિંદગી જીવવા માંગીએ છીએ. તમને જોઈતા પૈસા આપીશું એથી વધારે તમારે શું જોઈએ? હવે અમે દેવદર્શન, તીર્થયાત્રા કરીશું. સમાહો સાંભળીશું. એથી વધારે આપણે શું જોઈએ? અમે પણ પાછલી ઉંમરમાં તમારી જેમ ખાટલે પડીશું તો અમારું શું થશે? આ ઉંમરે બને તેટલું ભગવાનનું ભજન કરવું જોઈએ. ભગવાને એક દીકરી આપી છે, એ પણ સુખી છે. આપણે ખીચું શું જોઈએ?

તીર્થા તો વૃદ્ધા સાથે હળીમળી ગઈ હતી. રસોઈવાળી બાઈ રસોઈ કરીને જતી રહેતી ત્યારે તીર્થા કહેતી, તમે બપોરે ગરમ નાસ્તો જમો અને સાંજે હું જ તમને ગરમ રસોઈ બનાવી આપીશ. તમારે સવારની રસોઈ સાંજે જમવાની જરૂર નથી.

ત્યારબાદ તો તીર્થા ભૂલી ગઈ હતી કે એ આ ઘરમાં કેરેટકર તરીકે આવી હતી. એ તો એ વૃદ્ધાના પગ પણ દબાવતી અને લકવાવાળા હાથે માલિશ પણ કરી આપતી.

કેટલાંક દર્દો એવા હોય છે કે દવા સાથે પ્રેમ ભણે તો જલદી અસર કરતા થઈ જાય. વૃદ્ધાના દીકરા-વહુ મહેમાનની જેમ આંટો મારી જતાં. કંઈક કામકાજ હોય તો પૂછતા રહેતા હતા. પરંતુ તીર્થાના નિઃસ્વાર્થ પ્રેમ આગળ દીકરા-વહુનો પ્રેમ તુચ્છ લાગતો હતો. ખેંકમાં જવાનું, દવા લાવવાનું, ડૉક્ટરને ત્યાં લઈ જવાનું બધું જ કામ તીર્થા એ રીતે કરતી જાણે એની મા ના હોય...

તીર્થાને લાગતું હતું કે દિવસોને પાંખો લાગી ગઈ છે. પ્રતીકના ફોન આવતા રહેતા હતા. તીર્થા ખુશ હતી કે મને 'મા' મળી ગઈ છે.

પ્રતીક પણ કહેતો તીર્થા તારા મોં પર સંતોષ દેખાઈ આવે છે. અને તીર્થા એક ખાસ વાત કહું, મારું કામ અહીં બધાંને ખૂબ પસંદ પડ્યું છે, મારો પગાર પણ વધી ગયો છે.

ત્યારે તીર્થા કહેતી, આ તો વૃદ્ધાની આંતરડી કારવાનું પરિણામ છે. આપણે આપણી જિંદગી હવે ગરીબો અને રોગીઓની સેવામાં જ વિતાવવી છે. આપણે આપણી જિંદગી આપણી રીતે જ જીવવી છે.

એક દિવસ વૃદ્ધા આંખોમાં આંસુ સાથે બોલી ઊઠી: તીર્થા, દરેકને પોતાની જિંદગી પોતાની રીતે વિતાવવાની છૂટ છે. પરંતુ માત્ર મંદિરો, તીર્થયાત્રા કરવી અને મા-બાપને કેરેટકર રાખી આપ્યા છે એવા દંભ સાથે સમાજમાં વટ મારવો એ ક્યાંનો ન્યાય? અરે મંદિરમાં ભગવાનની મૂર્તિ પણ બોલી શકતી હોત તો એ ચોક્કસ બોલી ઊઠત, તમારા જેવા સંતાનો માટે તો મારા મંદિરમાં પ્રવેશબંધી છે. પથ્થરની મૂર્તિમાં ભગવાનને જોવાને બદલે જન્મદાત્રી માતામાં ઈશ્વરને જુઓ ને? કહેતાં વૃદ્ધા ચોધાર આંસુ સાથે રડી પડી.

પરંતુ એ રાત્રે પ્રતીકનો ફોન આવ્યો ત્યારે તીર્થાએ કહ્યું, - પ્રતીક, આપણી જિંદગી અમૂલ્ય છે એ આપણી રીતે જરૂર વિતાવવી જોઈએ. દીનદુઃખિયાની સેવા કરીને આપણી જિંદગી જીવ્યાને સાર્થક કરવી છે. અહીંથી મળેલ એક વર્ષના પૈસા આપણે ગરીબોની સેવા, દર્દીઓની દવા પાછળ ખર્ચી નાખીશું.

आर्यों का तीर्थ स्थल टंकारा चलो (यात्रा अवधि 9 दिन)

टंकारा, बड़ौदा, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, अहमदाबाद, कच्छ-भुज, रण-उत्सव, मांडवी

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं उप-कार्यालय आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग एवं श्री रामनाथ सहगल जी प्रेरणा से धर्मप्रेमी बहनों व भाईयों के लिए महर्षि दयानन्द जन्म स्थान, टंकारा यात्रा कच्छ-भुज, रणोत्सव यात्रा का सुनहरी अवसर 19.02.2020 को नई रेलवे दिल्ली स्टेशन से चलेंगे व 28.02.2020 को वापिस दिल्ली यात्रा समाप्त होगी। इस यात्रा में जाने के लिए यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी सीट यथाशीघ्र बुक करवा ले। जिससे की रेलवे में कन्फर्म बुकिंग मिल सके इस यात्रा में बस-रेल व आने व भोजन का सभी खर्च शामिल है।

कार्यक्रम व दर्शनीय स्थल:- 19.02.2020 नई दिल्ली से राजधानी एक्सप्रेस द्वारा प्रस्थान। 20.02.2020 अहमदाबाद रेलवे स्टेशन प्रातः ट्रेन से उतरकर लोकल ट्रेन द्वारा राजकोट व टंकारा के लिए प्रस्थान। 21.02.2020 टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आनन्द ले। 22.02.2020 प्रातः 05 बजे टंकारा से बड़ौदा के लिए प्रस्थान व दोपहर 2 बजे तक बड़ौदा होटल में विश्राम। 23.02.2020 प्रातः नाशते के पश्चात सरदार बल्लभ भाई पटेल की नई मूर्ति यूनिटी वन एवं यात्री बड़ौदा से-अहमदाबाद के लिए रेल द्वारा प्रस्थान। 24.02.2020 प्रातः नाशते के पश्चात अहमदाबाद में गाँधी आश्रम, अक्षरधाम मंदिर, वैष्णो माता मंदिर भ्रमण। 25.02.2020 प्रातः नाशते के पश्चात अहमदाबाद से बस द्वारा भुज के लिए प्रस्थान। 26.02.2020 प्रातः नाशते के पश्चात कच्छ-भुज रणोत्सव भ्रमण।, 27.02.2020 प्रातः नाशते के पश्चात् रण महोत्सव व मांडवी एवं श्यामजी कृष्ण वर्मा का स्टैच्यू भ्रमण, 28.02.2020 प्रातः वापसी अहमदाबाद एवं श्याम का रेल व हवाई जहाज द्वारा दिल्ली के लिए प्रस्थान।

यात्रा किराया:- 3 ए.सी. क्लास 26,800/- सीनियर सिटीजन 25,800/-, महिला सीनियर सिटीजन- 25,400/-

किराया- 2 ए.सी. क्लास 28,600/-, सीनियर सिटीजन 27,200/-, महिला सीनियर सिटीजन- 26,800/-

हवाई जहाज:- दिल्ली-अहमदाबाद-दिल्ली यात्रा किराया 30,500/-, 22.02.2020 से 28.02.20 तक।

नोट:- इन सभी स्थानों पर रहने व खाने की व्यवस्था होटल में होगी और टंकारा में रहने व खाने की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क है।

आर्यों का तीर्थ स्थल टंकारा चलो यात्रा अवधि 4 दिन:- 19.02.2020 नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से राजधानी एक्सप्रेस द्वारा अहमदाबाद के लिए प्रस्थान, 20.02.2020 प्रातः 10 बजे लोकल ट्रेन द्वारा राजकोट व टंकारा में ऋषि जन्म भूमि के लिए प्रस्थान, 21.02.2020 टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आनन्द लें, 22.02.2020 प्रातः 5 बजे टंकारा से अहमदाबाद व शाम राजधानी द्वारा नई दिल्ली के लिए प्रस्थान, यात्री रेल किराया-5100/-, सीनियर सिटीजन-4650/-

□ कहीं पर किसी मन्दिर, किले व नोकारोहण के समय कोई टिकट लेना होगा तो वे यात्री स्वयं लेंगे। □ कार्यक्रम में समय के अनुसार परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक का होगा। □ हमारी यात्रा में अकेली महिला व वृद्ध महिलाएँ भी यात्रा कर सकती है क्योंकि हमारी यात्रा का माहौल घर परिवार जैसा होता है। □ सभी यात्रियों से निवेदन है कि वे अपना चैक या **DRAFT ARYA TRAVEL** अथवा विजय सचदेव के नाम कोरियर या पोस्ट द्वारा भेज सकते हैं। □ इन यात्रियों में प्रत्येक कमरे में दो व्यक्ति ठहरेंगे इस यात्रा में रहने व खाने की व्यवस्था होगी इस यात्रा में खाना शाकाहारी होगा। □ इस यात्रा में रेलवे की बुकिंग कम्प्यूटर द्वारा जो सीट नंबर मिलेगा वही आपका सीट नंबर होगा। □ कृपया सभी सीनियर सिटीजन यात्री अपना आयु का प्रमाण पत्र साथ रखें। □ इस यात्रा में दोपहर का भोजन कभी कभी संभव नहीं हो पाता उस समय के लिए यात्री अपनी पसंद की खाने पिये की मन पसंद वस्तुएँ अपने पास रखें। □ सीट बुक कराने के लिए सभी यात्री 18000/- अग्रिम राशि के रूप में जमा करवा दें इस यात्रा में एक बार टिकट बन जाने पर अगर यात्री टिकट रद्द करवाता है तो 15000/- व जाने से तीन दिन पहले रद्द करवाने पर कुछ भी वापस नहीं मिलेगा क्योंकि होटल व बस, टिकट बुक हो चुकी होती है।

आर्य ट्रेवल- अमित सचदेवा, मो. 9868095401, विजय सचदेवा (सुपुत्र स्व. श्रीश्यामदास सचदेवा)

2613, चुना मंडी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-110055, फोन-011-45112521, 9811171166

आप ऋषि जन्मभूमि हेतु दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0015300 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी है मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा दें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

आगामी ऋषि बोधोत्सव 2020 के उपलक्ष्य में टंकारा ट्रस्ट की ओर से युवाओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। जिसमें भाग लेकर युवाशक्ति अपनी प्रतिभा उजागर करें।

वॉलीबॉल (शूटिंग) टूर्नामेन्ट- (सौराष्ट्र प्रदेश के खिलाड़ियों के लिए)

- विजेता टीम को शील्ड प्रदान की जायेगी। □ विजेता खिलाड़ियों, बेस्ट शूटर व बेस्ट नेटी को पुरस्कृत किया जायेगा। □ प्रवेश पत्र दिनांक 09 फरवरी-2020 तक स्वीकृत होंगे। □ यह टूर्नामेन्ट दिनांक 15 से 17 फरवरी-2020 के बीच में टंकारा ट्रस्ट के परिसर में होंगी।

महर्षि दयानन्द खेल महोत्सव (टंकारा तहसील के विद्यार्थियों के लिए)

- कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थी भाई-बहन भाग ले सकेंगे जिसमें विभिन्न मैदानी खेलों की प्रतियोगिता होंगी, जिसकी जानकारी विद्यालयों को अलग से दी जायेगी। □ विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार व प्रमाण पत्र दिये जायेंगे।

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जाता है जिसे योगदर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम फोटो के साथ अपने गुरुकुल के प्राचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के प्राचार्य/प्रतियोगिता संयोजक को भेज दें। प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को क्रमशः पांच हजार, तीन हजार, दो हजार रुपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

- बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का किराया दिया जायेगा।
- भोजन-आवास की सुविधा निःशुल्क रहेगी।
- भाग लेने के लिए गुरुकुल के प्राचार्य अपने छात्रों के नाम दिनांक 01 फरवरी 2020 तक पहुंचा देवे।
- यह प्रतियोगिता ऋषि बोधोत्सव पर दिनांक 20.02.2020 दोपहर 2.00 से 5.00 के सत्र में होगी।

अधिक जानकारी व नाम भेजने के लिए प्रतियोगिता संयोजक से सम्पर्क करें।

आचार्य रामदेव (प्राचार्य) मो. 9913251448

एयर इण्डिया हवाई जहाज से दिल्ली से राजकोट/टंकारा सीधे डेढ़ घंटे में

टंकारा के ऋषि भक्तों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि अब दिल्ली से राजकोट के लिए एयर इण्डिया की सीधा फ्लाईट्स आरम्भ हो गई है। ऋषि भक्तों के लिए सुविधाजनक रहेगा। ऋषि भक्तों के सुविधा हेतु बुधवार 19 फरवरी 2020 दोपहर 12.55 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 403 एवम् सायं 05.15 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 495 दिल्ली से राजकोट के लिए जायेगी। राजकोट से टंकारा मात्र 40 किलोमीटर की दूरी पर है। इसी तरह राजकोट से दिल्ली के लिए शनिवार 22 फरवरी 2020 दोपहर 03.10 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 404 एवम् एवम् सायं 07.30 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 496, टंकारा जाने वाले ऋषि भक्त इसका लाभ उठा सकते हैं।

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

‘टंकारा समाचार’ उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से ‘टंकारा समाचार’ की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

‘टंकारा समाचार’ का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवम् आजीवन शुल्क 1000/- रुपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से बैंक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

-प्रबन्धक

श्री नानक चन्द हिन्दी भाषा हेतु सम्मानित

हंसराज कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा 10-11 जनवरी को विज्ञान सभा, नयी दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में **श्री नानक चन्द जी (कोषाध्यक्ष डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली)** को हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिए महात्मा हंसराज अंतर्राष्ट्रीय हिंदी शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया। आप वर्ष 1971-1976 के दौरान हंसराज कालेज का विद्यार्थी रहे। 44 वर्ष बाद भी कालेज द्वारा सम्मानित किया जाना बड़े गौरव की बात है। इसके लिए सम्पूर्ण हिन्दी जगत् कालेज की प्राचार्या डॉ.रमा और उनके सहयोगियों का आभार व्यक्त करता है।



खुशियों के क्षण भाग्य से मिल सकते हैं लेकिन गौरव के पल परिश्रम, एकता और संघर्ष से मिलते हैं। 10-11 जनवरी को हंसराज कॉलेज ने विज्ञान भवन में जो दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया उसकी अपार सफलता ने हंसराज परिवार को अविस्मरणीय यादों से जोड़ दिया। दोनों दिन लगभग 20 देशों सहित देशभर के विभिन्न प्रदेशों के आए 150 वक्ताओं, अतिथियों, कवियों तथा विश्वभर से प्रतिनिधि और प्रतिभागी के रूप में शामिल हुए लगभग 3000 लोगों ने इस सम्मेलन को गरिमामय रूप दे दिया।

ऐसी सफलता जिसकी गूंज वर्षों तक जीवित रहेगी। इस सम्मेलन में शामिल हुए विदेशी और भारतीय वक्ताओं ने बार-बार यह कहा कि ऐसा हिंदी का ऐसा आयोजन आज तक नहीं हुआ। हमें खुशी इस बात की है कि दोनों दिन वहां महात्मा हंसराज जी (डी.ए.वी. आन्दोलन के संस्थापक) का नाम गूंजा। इस कार्यक्रम की सफलता का सारा श्रेय हंसराज परिवार से जुड़े उन सभी लोगों को है जिन्होंने किसी न किसी रूप में सकारात्मक भाव से इसका हिस्सा बनकर इसे सफल बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई।

पत्र दर्पण टंकारा पत्रिका गागर में सागर

टंकारा समाचार पत्रिका बड़ी निराली है। छोटी सी पत्रिका उलट पलट कर पढ़ने वाली नहीं यह तो मानो गागर में सागर भरा है, वेद की ऋचाओं के मन्त्र, छोटी सी प्रेरक बोध कथाएं अनायास ही, एक निराली छाप की तरह, तहे दिल तक समा जाती हैं।

इस पत्रिका को पढ़ें एवं दूसरों को पढ़ाओं इसके अधिक से अधिक मेम्बर बनाने का सब को प्रयत्न करना चाहिए। अजय टंकारावाला का अथक प्रयास सार्थक बनाना चाहिए।

पत्रिका पढ़ कर जो कुछ भी नवीन अनुभव एवं विचार आपके मन में आये उन्हें आर्य जनता को अवगत करायें ज्ञान बांटने से आपको अत्यन्त सुख की अनुभूती होगी, ज्ञान बांटने से बढ़ता ही जाता है।

वेद को पढ़ना पढ़ाना चाहिए। वेद को सुनना, सुनाना चाहिए। इस निराली पत्रिका को भी पढ़ें। अगर आप स्वाध्यायशील हैं तो आप सबको शुभकामनाएं। प्रभु कृपा सब पर बनी रहे। सब का जीवन, सुखमय एवं स्वस्थ रहे। अनेक शुभकामनाओं के साथ।

सरला ठक्कर, नागपुर-1, महाराष्ट्र, मो. 9890277213

(पृष्ठ 01 का शेष)

“सा नो भूमित्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे”

विवेकपूर्ण लोगों का छोटा सा दल भी असंख्य मूर्खों से अच्छा है। महर्षि की भावना कितनी पवित्र थी। राष्ट्र के प्रति तहे दिल सेवा ही वास्तविक सेवा है। यह भारत माता का सौभाग्य ही समझना चाहिए। हमारी माता को ‘दयानन्द सरस्वती’ सा पुत्र मिला। उनका कथन कितना सत्यपरक है।

जिनकी विद्या-कुल और कर्तव्य तीनों ही श्रेयस्कर हैं उन्हें राष्ट्र की सेवा का अवसर मिलना ही उचित है त्याग और सेवा हमारे देश का आदर्श है। त्याग और सेवा ही महर्षि की भव्य भावना थी उसे उन्नत परक करना हमारा कर्तव्य है। सेवा से आपका अनजान व्यक्ति भी सर्वदा सेवक हो जाता है। इसी पुनीत भावना से अपना कर्तव्य करना चाहिए, यही ऋषि की भव्य भावना थी।

(पृष्ठ 02 का शेष)

है एक निश्चय, एक संकल्प करने की—‘चाहे कैसी भी परिस्थितियां हों, मैं क्रोध का गुलाम नहीं होऊंगा।’ जब क्रोध आने लगे तो इसी वाक्य को दोहराते रहें अथवा गायत्री मंत्र का पाठ करते रहें। कुछ ही समय के अभ्यास से आप क्रोध की प्रतीति से दूर हो जायेंगे और क्रोध पर हावी हो जायेंगे। तब आप पायेंगे कि आपका जीवन दर्शन ही बदल गया है। आपकी सोच में एक इन्द्रधनुषी बदलाव आ गया है। आपको आसपास का वातावरण अधिक सुन्दर, आकर्षक और लुभावना लगने लगेगा। प्रयोग करके देखिये। आपको इस शत्रु से छुटकारा अवश्य मिलेगा। इसी कामना और शुभकामनाओं के साथ, खुश रहो, खुशहाल रहो, मुस्कुराते रहो (Keep Smiling)

❑ भरोसा जीता जाता है मांगा नहीं जाता। ये वो दौलत है जिसे पाया जाता है कमाया नहीं जाता।

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20,000/- रुपये प्रति गाय



हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि श्री महर्षि

दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

एक प्रेरणा

**परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं
अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें**

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 125 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि 'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा' के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

—: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल (मन्त्री)

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी **बोधोत्सव 20, 21, 22 फरवरी 2020** को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 10 जनवरी 2020 तक भिजवाकर कृतार्थ करें। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य एवम् अन्य उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हो। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पुष्ठों से अधिक न हो तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल tankarasamachar@gmail.com या mayankprinters5@gmail.com पर "वॉकमेन चाणक्य" टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय, सम्पादक टंकारा समाचार, चलभाष 9810035658

सम्पादकीय कार्यालय: ए-419, ओ३म् ध्वज सदन, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

लोग आईना कभी भी ना देखते
अगर आईने में चित्र की जगह
चरित्र दिखाई देता।

टंकारा समाचार

फरवरी 2020

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2018-20

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-02-2020

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.01.2020



ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष बोधोत्सव का आयोजन 20, 21, 22 फरवरी 2020 (वीरवार, शुक्रवार, शनिवार) को महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

सामवेद पाठायण यज्ञ: 15 फरवरी से 21 फरवरी 2020 तक

ब्रह्मा: आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत: श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर) डॉ सुकृति माथुर व श्री अविरल माथुर (दिल्ली)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष:

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी.कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति/आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् ट्रस्टी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा)

बोधोत्सव

दिनांक 21.02.2020

ऋषि स्मृति समारोह

मुख्य अतिथि: महामहिम आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात सरकार

विशिष्ट अतिथि: पद्मभूषण महाशय धर्मपाल, एम.डी.एच. (प्रतिष्ठित उद्योगपति)

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

अध्यक्षता: श्री सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

कार्यक्रम के आमन्त्रित महानुभाव: स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक सरस्वती (रोजड़), स्वामी आर्येशानन्द (माउन्ट आबू), स्वामी शान्तानन्द (गुजरात), स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती (यमुनानगर), साध्वी उत्तमायती (अजमेर), डॉ. विनय विद्यालंकार (उत्तराखण्ड), डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार (ओ.एस.डी. राज्यपाल गुजरात), श्री मिठाई लाल सिंह (प्रधान मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री विनय आर्य (मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), गिरीश खोसला (वेद पथिक अमेरिका), भावेश खोसला (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका), अशोक सहगल (अखिल भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा), श्री मोहन भाई कुण्डारिया (स्थानीय सांसद), श्री बल्लभभाई कथीरिया (राजकोट) एवम् इसके अतिरिक्त देश विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिए एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरवी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0015300 में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर दें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या, उपप्रधाना

रामनाथ सहगल, मन्त्री